नमाज मे रफायदैन रूकू से पहले व बाद

(1) सालिम रह0 अपने वालिद सैय्यदना हजरत अब्दुल्ला बिन उमर रजि0 से रिवायत करते है :-

रसुले अकरम सल्लाल्लाहु अलैहे वसल्लम जब नमाज शुरू करते तो अपने दोनो हाथ कंधो तक उठाते, इसी तरह जब रूकू की तकबीर कहते और जब रूकू से सर उठाते तो अपने दोनो हाथ अपने कंधों तक उठाते और (समिअल्लाह हुलेमन हमेदा) कहते और सजदो मे रफायदैन नहीं करते थें। (सहीह बुखारी 1-702, सहीह मुस्लिम 1-768)

ये हदीस दर्ज ज़ेल किताब हदीस मे भी मौजूद है :-

सहीह इब्ने खुजैमा (232-1), सहीह इब्ने हब्बान (168-3), सहीह इब्ने अवाना (2-90), सुनन तिर्मिजी (1-59),

लेहाजा हदीस मुत्ताफाकुन अलैह है।

इस फेहरिस्त को मजीद बढ़ाया भी जा सकता है क्योकि शायद ही हदीस की कोई मोतबर किताब ऐसी हो जिस मे ये रिवायत मौजूद न हो, इस हदीस की सेहत पर कोई कलाम नहीं, इसलिये इमाम अली बिन मदनी फरमाते है :-

मेरे नजदीक ये हदीस तमाम लोगो पर हुज्रत है कि जो भी सुने वो इस पर अमल करे (फतुहुल बारी 2/175)

(2) मशहूर ताबाई हज़रत नाफे रह0 बयान करते है :-

सैय्यदना अब्दुल्ला बिन उमर रजि0 जब नमाज शुरू करते तो तकबीर कहते और अपने दोनो हाथ उठाते और जब रूकू करते तो दोनो हाथ उठाते और जब समिअल्लाह हूलेमन हमेदा कहते तो दोनो हाथ उठाते और जब दो रकअत से उठते तो दोनो हाथ उठाते और इब्ने उमर रजि0 अपने इस अमल को नबी सल्लाल्लाहू अलैहे वसल्लम तक मरफू बयान करते

(सहीह बुखारी 1/708)

ये हदीस वाजेह दलील है इस बात कि कि सैय्यदना अब्दुल्लाह बिन उमर रजि0 न सिर्फ बयान की गई जगहो पर नमाज मे रफायदैन को नबी सल्लाल्लाहु अलैहे वसल्लम की सुन्नत करार देते थे बल्कि खुद भी इस सुन्नत मुबारक पर अमल पैरा थे। इस सहीह तरीन रिवायत के बर अक्स चंद लोग का कुछ कमजोर और जईफ रिवायत की बिना पर ये दावा करना कि सैय्यदना इब्ने उमर रजि0 रफायदैन को मंसूख या मतरूक समझते थे, सख्त गलत और धोका देने वाली बात है, सैय्यदना इब्ने उमर रजि0 को तो इस सुन्नत से इतनी मुहब्बत थी की जो जाहिल रफायदैन न करता उसे कंकरियां से मारते , चुनांचे नाफेह रह0 बयान करते है :-

सैय्यदना इब्ने उमर रजि0 जिस शख्स को देखते कि रूकू जाते और रूकू से उठते वक्त रफायदैन नहीं करता तो इसे कंकरियों से मारते

इमाम नवीव रह0 ने इस रिवायत को सहीह करार दिया है।

(3) अबु कलाबा (ताबई) रह0 बयान करते है :-

सैय्यदना मालिक बिन हुवैरिस रजि0 जब नमाज पढ़ते तो तकबीर के साथ रफायदैन करते और जब रूकू करते तो रफायदैन करते और जब रूकू से सर उठाते तो रफायदैन करते और फरमाते कि रसुलूल्लाह सल्लाल्लाहु अलैहे वसल्लम इसी तरह करते थे।

(सहीह बुखारी 1/102)

ये हदीस दर्जे ज़ेल हदीस की किताबो मे भी मौजूद है :-

(सहीह इब्ने खुजैमा 1/295, सहीह इब्ने हब्बान 3/175, सहीह इब्ने उवाना 2/94)

ये सहीह हदीस भी इस बात की दलील है कि नबी सल्लाल्लाहु अलैहे वसल्लम रफायदैन करते थे और इन की इक्तेदा व पैरवी करते हुए सहाबी रसुल सल्लाल्लाहु अलैहे वसल्लम मालिक बिन हुवैरस रजि0 भी रूकू जाते और रूकू से सर उठाते वक्त रफायदैन करते थे, सैय्यदना मालिक बिन हुवैरस का नबी सल्लाल्लाहु अलैहे वसल्लम के बाद भी इस सुन्नत पर अमल पैरा रहना इस बात की दलील है कि रफायदैन हरगिज मतरूक या मंसूख नहीं है।

क्रमशः 2..

चुनांचे मौलाना अब्दुल हई हंफी फरमाते है :–

बेशक हजरत वाईल बिन हुज्र रजि0 रफायदैन करने वाली रिवायत मे मुनफरिद नहीं बल्कि एक कसीर गिरोह सहाबा किराम रजि0 है। लेकिन इसके बरअक्स तर्क रफायदैन को कोई भी रिवायत नहीं करता मगर सिर्फ इब्ने मसउद्द रजि0 (आगे इंशाअल्लाह दलाईल से साबित किया जायेग कि सैय्यदना इब्ने मसउद्द रजि0 से भी तर्क रफायदैन साबित नहीं) और सनद के एतबार से रफायदैन की अहादिस औसक भी है और ज्यादा साबित भी

(5) सहाबी रसुल सल्लाल्लाहु अलैहे वसल्लम सैय्यदना अबु हुमैद साअदी रजि0 ने रसुल सल्लाल्लाहु अलैहे वसल्लम की नमाज का तरीका दस सहाबा किराम रजि0 की एक जमाअत मे बयान किया तो फरमाया :–

रसुल अल्लाह सल्लाल्लाहु अलैहे वसल्लम जब नमाज के लिये खड़े होते तो तकबीर कहते और अपने दोनो हाथ कंधो तक उठाते और हर हड्डी अपनी जगह एतदाल से ठहर जाती, फिर किरअत करते फिर अपने दोनो हाथ कंधो तक उठाते फिर रूकू करते और अपनी हथेलियां अपने घुटनो पर रखते (रूकू में) सर ऊंचा रखते न नीचा, फिर सर उठाते और समिअल्लाह हुलेमन हमेदा कहते और अपने दानो हाथ कंधो तक उठाते, फिर जब दो रकअत पढ़ कर खड़े होते तो तकबीर कहते और दोनो हाथ अपने कंधो तक उठाते,(जब मुकम्मल तरीका बयान कर दिया तो दस के दस) सहाबा किराम रजि0 ने कहा – आप ने सच फरमाया नबी अकरम सल्लाल्लाहु अलैहे वसल्लम इसी तरह नमाज पढ़ते थे।

(सुनन अबु दाऊद 1/730)

ये हदीस दर्जे ज़ेल किताबो मे भी मौजूद है :–

सहीह इब्ने खुजैमा (587,588) सुनन तिर्मिजी (304), सहीह इब्ने हब्बान (171,3)

इस हदीस को इमाम बुखारी रह0, इमाम तिर्मिजी रह0, इमाम इब्ने खुजैमा रह0, इमाम इब्ने हब्बान रह0,इमाम इब्ने तैमिया रह0, इमाम इब्ने कय्युम रह0 और इमाम खताबी रह0 वगैरह ने सहीह करार दिया है, ये सहीह हदीस इस बात की जबरदस्त दलील है कि रूकू जाते, रूकू से सर उठाते वक्त और इसी तरह दो रकअत पढ़ कर तीसरी रकअत के शुरू मे रफायदैन करना नबी सल्लाल्लाहु अलैहे वसल्लम की सुन्नत है। इस से ये भी साबित हुआ कि रफायदैन करना नबी सल्लाल्लाहु अलैहे वसल्लम ने आखरी उम्र तक जारी रखा और इसे मंसूख या तर्क नहीं किया क्योकि सैय्यदना अबु हुमैद साअदी रजि0 ने इसे नबी सल्लाल्लाहु अलैहे वसल्लम की वफात के बाद दस सहाबा किराम रजि0 के एक जमाअत मे बयान किया तो किसी एक सहाबी ने भी इसका इंकार न किया बल्कि इस रफायदैन वाली नमाज को ही नबी सल्लाल्लाहु अलैहे वसल्लम की नमाज करार दिया, किसी एक सहाबी ने भी ये एतराज न किया कि ये अमल तो मंसूख या मतरूक है क्योकि वो सब रफायदैन इन्दरूकू व बाद फी सलात को ही सुन्नत नबवी सल्लाल्लाहु अलैहे वसल्लम समझा था।

(6) सैय्यदना अब्दुल्ला बिन जुबैर रजि0 फरमाते है :–

मैने सैय्यदना अबुबक्र सिद्दीक रजि0 के पीछे नमाज पढ़ी, वो नमाज शुरू करते वक्त, रूकू से पहले और रूके के बाद रफायदैन करते थे और अबु बक्र सिद्दीक रजि0 ने फरमाया मै ने रसुल सल्लाल्लाहु अलैहे वसल्लम के पीछे नमाज पढ़ी है, आप सल्लाल्लाहु अलैहे वसल्लम नमाज शुरू करते वक्त, रूकू से पहले और रूकू के बाद रफायदैन करते थे।

(सुनन अल कबरी 73,2,)

ये हदीस भी इस बात का वाजेह सबुत है कि नबी सल्लाल्लाहु अलैहे वसल्लम रूकू जाते और रूकू से सर उठाते वक्त रफायदैन करते थे और इसी के मुताबिक हमेशा आप सल्लाल्लाहु अलैहे वसल्लम के साथ रहने वाले, दुनिया व आखिरत मे आप सल्लाल्लाहु अलैहे वसल्लम के साथी सैय्यदना अबु बक्र रजि0 भी रफायदैन के साथ नमाज पढ़ते और इसी को आप सल्लाल्लाहु अलैहे वसल्लम के सुन्नत करार देते नबी सल्लाल्लाहु अलैहे वसल्लम के सब से करीबी साथी का रफायदैन के साथ नमाज पढ़ना इस बात की पुख्ता तरीन दलील है कि रफायदैन हरगिज मंसूख या तर्क नहीं।

क्रमशः 4..

इससे ये बात साबित हो गई कि रफायदैन को सिर्फ सैय्यदना वाईल बिन हुज्र रजि0 ही नही बल्कि सहाबा किराम रजि0 की एक कसीर जमाअत न सिर्फ रिवायत करती है बल्कि इसी के मुताबिक इन का अमल भी साबित है।

चुनांचे मशहूर ताबई सईद बिन जुबैर रह0 से रफायदैन के मुत्तालिक सवाल किया गया तो आप रह0 ने फरमाया :-

नमाज की जीनत है और रसुल अल्लाह सल्लाल्लाहु अलैहे वसल्लम के सहाबा किराम रजि0 शुरू नमाज मे, रूकू के वक्त और रूकू से सर उठाते वक्त रफायदैन करते थे।

(सुनन अल कुबरी, अल बैहकी 75/2 व सनद सहीह)

इन सहीह रिवायत के बर खिलाफ कमजोर और जईफ रिवायत की बुनियाद पर ये दावा करना कि रफायदैन मुतरक या मंसूख हो गया था और सहाबा किराम रजि0 ने रफायदैन छोड़ दिया था, सिवाए दिन को रात और रात को दिन साबित करने के कोई हैसियत नहीं रखता। जो भी रिवायत रफायदैन के मना या तर्क पर पेश की जाती है वो हरगिज साबित नहीं या इन से जो इस्तदलाल किया जाता है वही गलत है। जिस की वजाहत हम इंशाअल्लाह आगे कर रहे है, अमीरूल मोमिनीन फीलहदीस इमाम बुखारी रह0 क्या खूब फरमाते है :-

किसी एक सहाबी रजि0 से भी रफायदैन न करना साबित नहीं

(जज़ाए रफायदैन सफा 86)

चुनांचे इमाम बुखारी रह0 फरमाते है :–

बाज बे इल्म लोगो का इस हदीस से दलील पकड़ना जो जाबिर बिन सुमरा रजि0 से मरवी है कि आप सल्लाल्लाहु अलैहे वसल्लम ने फरमाया – क्या वजह है कि मै तुम्हे देखता हूं ...... तो ये रिवायत सिर्फ तशहदूद के बारे मे है कयाम के बारे मे नहीं। जिस शख्स का इल्म मे थोड़ा सा भी हिस्सा है वो इस रिवायत से दलील नहीं लेता। ये बात मशहूर है इस मे कोई इख्तेलाफ नहीं।

(तलखीस अल हबीर)

इमाम नौवीवी रह0 फरमाते है :–

इस रिवायत से रूकू जाते और सर उठाते वक्त रफायदैन न करने की दलील लेना अजीब बात और सुन्नत से जेहालत की कबीह किस्म है।

(अल मजमूआ)

हाफिज इब्ने हजर असकलानी रह0 फरमाते है :–

इससे रूकू के वक्त रफायदैन के मना पर दलील लाना दुरूस्त नहीं क्योकि पहली हदीस दूसरी हदीस की मुख्तसीर है

(तलखीस अल हबीर)

इससे पता चला कि हदीस जाबिर बिन सुमरा रजि0 से मना रफायदैन पर इस्तदलाल करना हरगिज दुरूस्त नहीं, और अहनाफ मे से कुछ लोगो का अवकात को अलग अलग करार देना भी गलत है क्योकि पहली हदीस दूसरी हदीस की मुख्तसीर है, इसी लिये अहनाफ ही मे से कुछ लोगो ने रफायदैन के मसले मे इस हदीस से इस्तदलाल को गलत और इंसाफ के खिलाफ करार दिया है।

चुनांचे हंफी देवबंदीयो के शेखुल हिंद मेहमूदुलहसन देवबंदी फरमाते है :–

बाकी अजनाब अल खिल की रिवायत से जवाब देना बराए इंसाफ दुरूस्त नहीं, क्योकि वो सलाम की बारे मे है कि सहाबा किराम रजि0 फरमाते है कि हम बवक्त सलाम नमाज इशारा बुलंद भी करते थे आप सल्लाल्लाहु अलैहे वसल्लम ने इस को मना फरमा दिया।

(तकरीर हजरत शेखुल हिंद 65)

मौलाना तकी उस्मानी हंफी देवबंदी फरमाते है :–

लेकिन इंसाफ की बात ये है कि इस हदीस से हंफीया का इस्तदलाल मशतबा और कमजोर है।

(दर्से तिर्मिजी 36/2)

तीसरा जवाब :–

हदीस जाबिर बिन सुमरा रजि० मे तो रूकू वाले रफायदैन का जिक्र तक नहीं फिर न जाने इसे रफायदैन के मसले पर पेश क्यो किया जाता है ? अगर हठधर्मी और नाइसांफी का मुहाजरा करते हुए दुसरी रिवायत और मुहद्दसीन किराम की तसरीहात से कतअ नजर कर के ये कहा जाये कि इस मे नबी सल्लललल्लाहू अलैहि वसल्लम की नमाज के दौरान कहीं भी हाथ उठाने से मना कर दिया है लेहाजा ये रूकू वाले रफायदैन के मना पर भी दलील है तो जवाबन अर्ज है कि फिर खुद इस पर मुखालेफिन का अमल भी नही क्योकि वो खुद भी शुरू नमाज मे नमाज वित्र मे कुनुत से पहले और नमाज ईदैन मे कई बार रफायदैन करते है। अगर रूके वाले रफायदैन इस हदीस से ममनूअ है तो फिर खुद जिन जगहो पर नमाज मे रफायदैन करते है वो भी मना है क्योकि इस रिवायत मे खास किसी भी जगह का जिक्र ही नही है।

लेहाजा सही बात यही है कि इस हदीस का कोई ताल्लुक नमाज मे नबी सल्लललल्लाहू अलैहि वसल्लम से साबित किसी भी रफायदैन के साथ नहीं बल्कि इस का ताल्लुक तशहदूद और सलाम के साथ है, अगर इस रिवायत को मुत्तालिक नमाज मे हाथ उठाने से मना पर दलील बनाया जाये तो फिर शुरू नमाज वाला रफायदैन, ईदैन के जायद तकबीरात वाला रफायदैन और वित्र मे कुनूत से पहले किया जाने वाला रफायदैन कैसे सही है ? इतनी वजाहत के बावजूद भी इस रिवायत से रफायदैन के खिलाफ दलील लाना महज हठधर्मी और सीनाजोरी ही है। अल्लाह समझ की तौफीक दे ! आमीन।

क्रमश:– 8..

और उन के मुकाबले मे आज के चंद उलमा की कोई हैसियत नहीं। दुसरा ये कि इस हदीस को सनदन भी ब दलाईल जईफ साबित किया जा चुका है, अब इस के मुकाबले मे किसी का भी बिला दलील इस रिवायत को सहीह करार देना कोई माअनी नहीं रखता। जो बात उसूली तौर पर ही गैर सहीह है वो किसी के सहीह कहने से सहीह नही हो सकती, चाहे कहना वाला अहले हदीस हो या गैर अहले हदीस, जो इस हदीस को सहीह कहता है उसे चाहिये कि हमारे दलाईल को रद्द करते हुए ब दलाईल इस हदीस को सहीह साबित करे।

नीज ये कि सुफियान सूरी रह0 का मुदल्लिस होना और मुदल्लिस की अन वाली रिवायत का जईफ होना खुद मुखालेफिन के अपने घर से भी साबित है, जैसा कि –

सरफराज अहमद खान सफदर हंफी देवबंदी बहवाला लिखते है :–

"मुदल्लिस रावी अन से रिवायत करे तो वो हुज्जत नही ये कि वो तहदीस करे या इस का कोई सका मताबेह हो (खजाईने सुन्नत) फिर खुद इसी किताब मे सुफयान सुरी रह0 को मुद्दल्लिस भी करार दिया है (देखिये खजाईन सुनन 77/2)"

अमीन ओकरवी हंफी देवबंदी ने भी सुफियान सुरी रह0 को मुदल्लिस तसलीम कर के इन की अन वाली रिवायत पर जिरह कर रखी है (मजमुआ रिसाईल 331/3)

इसी तरह फिकह हंफी के दुसरे तकलीदी ग्रुप के अहमद रजा बरेलवी फरमाते है :–

"और मुदल्लिस जमहूर मुहद्दसीन के मजहब मे मरदूद न मुसनद है (फतावा रिजविया 245/5)"

अहमद रजा खान मजीद लिखते है –

"और मुदल्लिस असूल मुहद्दसीन पर नामकबूल है (फतावा रजविया 266/5)"

मुहम्मद अब्बास रजवी बरेलवी एक जगह लिखते है :–

"यानि सुफियान सुरी रह0 मुदल्लिस है और ये रिवायत उन्होने आसिम बिन कलीब से अन के साथ ली है और उसूल मुहद्दसीन के तहत मुदल्लिस का अनअना गैर मकबूल है (मुनाजरे ही मुनाजरे सफा 249)"

चुनांचे साबित हुआ कि रफायदैन के खिलाफ पेश की जाने वाली सैय्यदना अब्दुल्ला बिन मसऊद रदि0 से मंसूब रिवायत भी जईफ है क्योकि सुफियान सुरी रह0 रावी मुदल्लिस है और इस ने ये रिवायत अन के साथ ली है।

<u>तीसरा जवाब :–</u>

सैय्यदना अब्दुल्ला बिन मसऊद रजि0 से मंसूब इस रिवायत मे रूकू जाते और रूकू से सर उठाते वक्त रफायदैन की नफी नही है बल्कि ये रिवायत आम है कि " हाथ नही उठाये सिवाए पहली दफा के " तो इस बात पर खुद मुखालेफिन का अमल भी नहीं है :–

1. अहनाफ खुद वित्र की नमाज मे पहली दफा के बाद भी दुआए कुनुत से पहले रफायदैन करते है।
2. इसी तरह नमाज इदैन मे पहली दफा के बाद भी जायद तकबीरात मे रफायदैन करते है।

अगर कहा जाए कि वित्र और इदैन की तखसीस दूसरी रिवायत से साबित है तो रूकू से पहले और रूकू के बाद वाली रफायदैन के तखसीस भी दूसरी सहीह रिवायत से साबित है।

इस हदीस से इसतदलाल करने वालो के लिये जरूरी है कि वो इस हदीस के अमूम से वित्र और इदैन के रफायदैन को बचाने की फिक्र करे क्योकि वो तो इस हदीस को सहीह बावर करवाते है, फिर इस हदीस के खिलाफ वित्र मे कुनुत से पहले और इदैन की नमाज मे जायद तकबीरात के साथ रफायदैन क्यो करते है ?

<u>चौथा जवाब :–</u>

अगर ये हदीस साबित भी होती तो इस से रफायदैन को कोई फर्क नहीं पड़ता क्योकि वो तो नबी करीम सल्लाल्लाहू अलैहि वसल्लम और कसीर सहाबा किराम रजिअल्लाहू अन्हू से सहीह तौर पर साबित है। ज्यादा से ज्यादा ये कहा जा सकता है कि सैय्यदना अब्दुल्ला बिन मसऊद रदि0 की राय इस मसले मे अलग थी जिस तरह बाकी कुछ मसाइल मे भी अलग रही हांलाकि सुन्नत कुछ और है।

क्रमशः– 10..

अलल अल हदीस के माहिर इमाम दार कुतनी रह0 ने भी यही कहा है कि यजीद ने आखिरी उम्र मे तलकीन कबूल कर के ये अल्फाज बढ़ा दिये थे (सुनन दारे कुतनी 294,1)

हाफिज इब्ने हब्बान रह0 बयान करते है :-

"इस रिवायत को इराकियों ने रूकू को जाते और रूकू से सर उठाते वक्त रफायदैन की नफी पर पेश किया है और इस रिवायत मे फिर दोबारा न करते, की ज्यादती नही थी और कूफियो ने यजीद बिन अबी जियाद की आखिरी उम्र मे इसे ये तलकीन की थी, पस यजीद ने इस तलकीन को कूबूल कर लिया जैसा कि सुफियान बिन उयैना ने बयान किया है ... और जिस शख्स का मशगला इल्म हो, वो इस तरह की कमजोर तरीन रिवायत को एहतजाज के तौर पर जिक्र नहीं करता।" (किताब अलमजर वहैयन 100,3)

मुहद्दसीन की इन तसरीहात से मालूम हुआ कि यजीद बिन अबी जियाद ये रिवायत अपनी जिन्दगी के इब्तदाई दौर मे "फिर दोबारा न करते" के अल्फाज के बगैर बयान करता था बाद मे इस ने कुछ लोगो की तलकीन कबूल कर के खुद से ये अल्फाज बढ़ा दिये थे लेहाजा इस रिवायत से इस्तदलाल गलत है।

तीसरा जवाब :-

यजीद बिन अबी जियाद, जईफ होने के साथ साथ मुदल्लिस भी था इसे इमाम अलअलाई रह0, इमाम हाकिम रह0 इमाम अबू महमूद अल मकदसी रह0 इमाम सयूती रह0 और हाफिज इब्न हजर असकलानी रह0 वगैर ने मुदल्लिस करार दिया है।(देखिये जामेह अल तहसील फी अहकाम अलमरसील स0 112, उलूमूल हदीस स0 105, 67 तबकात अल मुदल्लिस)

यजीद बिन अबी जियाद से तर्के रफायदैन यानि सुमला यउ़्द के इजाफे वाली जितनी भी रिवायत है इन मे से किसी मे भी इस ने समाअ की तसरीह नही की, लेहाजा ये हदीस मुदल्लिस के अनाना की वजह से भी जईफ है मुदल्लिस की मआनअन रिवायत अदम तसरीह समाअ की सुरत मे जईफ होती है जैसा कि हदीस अब्दुल्ला बिन मसऊद रदि0 के दसूरे जवाब मे साबित किया जा चुका है। चुनांचे साबित हुआ कि तर्के रफायदैन पर पेश की जाने वाली ये रिवायत भी जईफ है और इस काबिल नही कि इस से इस्तदलाल कायम किया जा सके।

इसके अलावा यज़ीद बिन अबू ज़ियाद जईफ है और शीआ भी था, फिर आखिरी उम्र मे उस का हाफिजा खराब हो गया (तकरीब) फिर वह मुदल्लिस था, इस के अलावा यह कि रफायदैन वाली हदीसे ऊला है क्योकि वह मुसबत है और मन्फी पर मुसबत को तर्जीह हासिल होती है।

(4) सैय्यदना अब्दुल्ला बिन मसऊद रजि0 से मंसूब एक और रिवायत

मुहम्मद बिन जाबिर अन हमाद अन इब्राहिम अन अलकमा की सनद से रिवायत है कि सैय्यदना अब्दुल्ला बिन मसऊद रदि0 ने फरमाया :-

"मैने नबी अकरम सल्लाल्लाहू अलैहि वसल्लम और अबू बक्र रजि0 और उमर रजि0 के साथ नमाज पढ़ी है, वो शूरू नमाज मे तकबीर ऊला के सिवा हाथ नहीं उठाते थे।" (सुनन दारे कुतनी 295,1)

इस रिवायत को भी तर्के रफायदैन पर जोर व शोर से पेश किया जाता है कि तर्के रफायदैन का सबूत नबी अकरम सल्लाल्लाहू अलैहि वसल्लम के साथ साथ सैय्यदना अबूबक्र रजि0 सैय्यदना उमर रजि0 और सैय्यदना अब्दुल्ला बिन मसऊद रजि0 से दे दिया गया है।

अलजवाब :-

ये हदीस सख्त जईफ है और कई अय्यमा मुहद्दसीन ने इस को साफ तौर पर जईफ करार दिया है बल्कि कुछ ने तो इसे मौजू रिवायत मे शामिल किया है - मुलाहिजा फरमाईये :-

1. इमाम दारे कुतनी रह0 इस रिवायत को बयान करने के बाद खुद फरमाते है :- "इस हदीस को सिर्फ मुहम्मद बिन जाबिर ने बयान किया और वो जईफ था" (सुनन दारे कुतनी 295,1)
2. इसी तरह इमाम बैहकी रह0 ने भी इस रिवायत को जईफ करार दिया (सूनन अल कुबरी)

क्रमश:- 12..

चुनांचे इमाम व हाफिज इब्न हजर असकलानी रह0 लिखते है :–

"किसी चीज के अदम जिक्र से इस का अदम वकू लाजिम नहीं आता"

इसी तरह अल्लामा इब्ने तरकानी हनफी फरमाते है :–

"जो किसी चीज को जिक्र न करे वो इस पर हुज्जत नहीं जो किसी चीज का जिक्र कर करे।"

लेहाजा इसी रिवायत जिस मे रूकू वाले या दूसरे साबित शुदा रफायदैन की नफी या तर्क नहीं बल्कि सिर्फ जिक्र नहीं है, से इस्तदलाल हरगिज सही नही, इस बात को मजीद यूं समझिये :–

"एक हदीस मे आया है कि नबी अकरम सल्लाल्लाहू अलैहि वसल्लम ने फरमाया – जब तू नमाज के लिये खड़ा हो तो तकबीर कह....."(सहीह बुखारी 757)

इस रिवायत मे किबला रु होने का कोई जिक्र नहीं, इसी तरह नमाज के लिये वुजू का कोई जिक्र नहीं हांलाकि ये दोनो चीजें नमाज मे फर्ज है और दूसरी कई रिवायत से साबित है – अब सिर्फ इस रिवायत को कोई पेश कर के ये कहने शुरू कर दे कि नमाज मे वुजू या किबला रु होना जरूरी नहीं तो इस बेवकूफ को ये समझाया जायेगा कि एक चीज का एक जगह पर जिक्र न होना इस की नफी की दलील नहीं होता अगर वो चीज दूसरी जगह से साबित हो।

इसी तरह वो रिवायत जिन मे रूकू जाते और रूकू से सर उठाते वक्त रफायदैन का जिक्र नहीं वो इस के तर्क की दलील हरगिज नही क्योकि वो दसूरी बेशुमार रिवायत से सहीह तौर पर साबित है। खुद सहीह बुखारी की कई एक रिवायत मे शुरू नमाज वाले रफायदैन तक का जिक्र नहीं, क्या इन मे अदम जिक्र की वजह से शुरू नमाज वाला रफायदैन भी मतरुक समझा जायेगा ? कई एक बेवकूफ इन रिवायत को भी रूकू वाले रफायदैन के तर्क पर पेश कर देते है, इस बात पर गौर किये बगैर के इन रिवायत मे तो शुरू नमाज वाले रफायदैन का भी जिक्र नहीं, लेहाज़ा इस बात को अच्छी तरह समझ लेना चाहिये कि किसी रिवायत मे एक चीज का जिक्र न होना हरगिज इस के नफी की दलील नहीं होता अगर वो दूसरी जगह से साबित हो।

<u>तीसरा जवाब :–</u>

इन रिवायत के पहले और दूसरे जवाब से थोड़ी देर के लिये सिर्फ नजर करते हुये ये देखे कि इन को रिवायत करने वाले है, सैय्यदना अब्दुल्ला बिन उमर रजि0 और सैय्यदना अबदुल्ला बिन अब्बास रजि0 और इन दोनो सहाबा रसुल सल्लल्लाहू अलैहि वसल्लम से खुद रूकू जाते और रूकू से सर उठाते वक्त रफायदैन करना साबित है, सैय्यदना अब्दुल्ला बिन उमर रजि0 से तो सहीह बुखारी मे मौजूद है और सैय्यदना अबदुल्ला बिन अब्बास रजि0 से भी साबित है कि आप रजि0 रूकू जाते और रूकू से सर उठाते वक्त रफायदैन करते थे। (देखिये मुसन्निफ इब्न अबी शैबा 1,235 व सनद हसन)

गोया हमारे मेहरबान जो जबरदस्ती इस हदीस से मतलब निकालना चाहते है कि रफायदैन मुतरक है, वो मतलब खुद इस हदीस के बयान करने वालो के जेहन मे भी नहीं था, महज मुखालेफिन की हठधर्मी और जोर जबरदस्ती ही है। अल्लाह समझने की तौफीक दे। "आमीन"

नबी अकरम सल्लाल्लाहू अलैहि वसल्लमकी सुन्नत मुबारका रफायदैन अन्दरूकू व बाद फी सलात को सहीह अहादीस से साबित कर दिया गया है और इस के मुकाबले जो शहादत पेश किये जाते है उन मे से भी कसीर का जवाब तफसील से दे दिया गया है नबी अकरम सल्लाल्लाहू अलैहि वसल्लम से रफायदैन का साबित होना तो खुद मुखालेफिन को भी तसलीम है। इस के बाद इन का दावा है कि बाद मे रफायदैन मंसूख कर दिया गया। चुनांचे इस सुन्नत को मंसूख मानने वालो पर लाजिम है कि कोई एक सहीह मरफू हदीस पेश करे जिस मे नबी अकरम सल्लाल्लाहू अलैहि वसल्लम ने रूकू जाते और रूकू से सर उठाते वक्त रफायदैन करने से मना किया हो, वरना लोगो को महज जिद मे इस सुन्नत मुबारका से दूर न करे। आखिर मे अल्लाह से दुआ है कि हमे ताअसुब्ब और जिद की बजाए इंसाफ से काम लेने की तौफीक इनायत फरमाये और हम सब को नबी अकरम सल्लाल्लाहू अलैहि वसल्लम के मुबारक तरीके का राही बना दे। "आमीन या रब्बुल आलेमीन।"

क्रमशः– 14..